INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in November 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

# छात्रों एवं छात्राओं के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Basant Kumar, Research Scholar, Department of Education, Radha Govind University, Jharkhand

## भूमिका

मानव समाज का जैविक एवं सामाजिक विकास अचानक नहीं हुआ, अपितु प्रागैतिहासिक काल से विकास की एक लम्बी प्रक्रिया रही है यह सत्य है कि इतिहास के दोहराने से वर्तमान नहीं बदला जा सकता है किन्तु प्राचीन काल से विभिन्न स्तरों पर होने वाले परिवर्तन के आधार पर आगामी परिवर्तन का अनुमान लगाया जा सकता है।

अतः समीक्षात्मक दृष्टि से देखें तो हमारे समग्र ज्ञान की शिलाएं पूर्वजों के ज्ञान द्वारा ही निर्मित हैं। बिना पूर्ववर्ती सर्वेक्षण के श्रम व श्रोतों का अपव्यय होता है तथा पुष्टपोषण होने की संभावना रहती है।

मानव मस्तिष्क के ज्ञान की सीमाओं का रेचन तथा परिष्करण पूर्व ज्ञान के आधार पर ही किया जा सकता है अर्थात् पूर्व ज्ञान वर्तमान ज्ञान के लिये आधार सोपान का कार्य करता है।

### अध्ययन के उद्देश्य

कोई भी शोध परक अध्ययन स्वंतत्र रूप से किसी अनुसंधान को जन्म नहीं दे सकता है। समीक्षाएं पूर्ववर्ती ज्ञान के आधार पर की जाती हैं। आज होने वाले नये अविष्कार प्राचीन काल की कहानियों से संप्रेरित हैं अर्थात् ज्ञान की कोई भी शाखा पुराने किसी भी ज्ञान का अवलम्ब लिये बिना खड़ी नहीं हो सकती है। पूर्ववर्ती ज्ञान की शाखाओं को सम्बन्धित और विवर्धित करके नूतन ज्ञान का आर्विभाव होता है।

आज परिस्थितियों तेजी से बदल रही हैं। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव तथा भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप नैतिक मूल आर्थिक स्तर, एवं सामाजिक संस्तर, त्वरित गति से परिवर्तित हो रहे हैं। यही कारण है कि जो अन्वेषण दो दशक पहले किया गया हो आज अपने महत्व को खो देता है।

नीति निर्धारक तत्वों एवं पारंपरिक परिभाषाओं के नये आयाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऐसे में पुराने शोध परक अध्ययन की सामयिक परिस्थितियों में पुनः समीक्षा करना भी एक उत्कृष्ट शोध माना जाता हैं आज किया जाने वाला कोई शोध यदि पूर्ववर्ती शोध को चुनौती देता है तो यह महत्वपूर्ण अनुसंधान है।

किसी भी अनुसंधान को सही ढंग से कार्य रूप देने के लिये कुछ आधार की आवश्यकता होती है। यह आधार शोध को दिशा प्रदान करते हैं तथा चिंतन की श्रृंखला प्रदान करता है। मनुष्य के पास अपने चारों ओर के परिवेश को नियंत्रित करने के लिये ईश्वर प्रदत्त बुद्धि और मानसिक शक्तियॉ हैं जिनका प्रयोग कर वह विभिन्न अन्तः क्रियाओं द्वारा समाज के साथ सानुकूलन स्थापित करता है।

किसी भी अनुसंधान कार्य के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा एक ऐसी दृढ़ आधारशिला है, जिस पर कल का होने वाला शोध अवलम्बित होता है। सम्बन्धित साहित्य का तात्पर्य ज्ञान की उस शाखा से है, जो किये जाने वाले अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित हो अर्थात् अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित सभी पुस्तकें, ज्ञान कोष, पत्र–पत्रिकाएें, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से शोध समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को शोध परक रूप से आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

### समस्या का उद्भव एवं समस्या कथन

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है। जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं किया गया तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना हो जाती है, अर्थात वह पुनरावृति भी हो सकती है।

उस दृष्टि से अनुसन्धान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में अनुसंधानकर्ता की संवेदनशीलता का बहुत महत्व होता है, जिसके कारण अनुसंधानकर्ता पूर्व में हुई गलतियों व अपूर्णताओं को अपनी पैनी निगाह से आगामी अध्ययनों में नवीन स्वरूप देकर सुधार कर सकता है। उक्त विचार ही खोज तथा अनुसंधान के दर्शन की मूल्य मीमांसा है।

### शोध परिकल्पनाएं

शोध समस्या के समाधान के लिए शोध की समुचित प्रविधि का ज्ञान प्राप्त करना, सिद्धान्तों, व्याख्याओं तथा परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देना, सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के द्वारा ही संभव होता है। समंकों के संकलन, उनके विश्लेषण और उनके प्रक्रियाकरण की विधि भी सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से संज्ञान में आती है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि शोध में रचनात्मकता, मौलिकता और चिन्तन के विकास के लिये विस्तृत और गंभीर अध्ययन की आवश्यकता है।

जब मनुष्य की नवींन पीढ़ी किसी कार्य को आरम्भ करने के लिए प्राचीन ज्ञान और अनुभव का अनुप्रयोग नहीं करती तो वह नवीन ज्ञान प्राप्त कर ही नहीं सकती और यदि करती भी है तो उसकी उपयोगिता

की दिशा सार्थक नहीं होती। हम आज नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के अन्वेषक हैं, लेकिन यदि गहन समीक्षात्मक दृष्टि से देखें तो वह कदाचित नई चीज नहीं है। इसके आधार में प्राचीन ज्ञान, अनुभव और तकनीकी का समावेश दृष्टिगोचर होता है।

बिना प्राचीन सूचना प्रौद्योगिकी के आज हम डिजिटल सूचना युग में प्रवेश नहीं कर सके होते। वास्तविकता यह है कि हमारे समग्र ज्ञान की आधार शिलायें पूर्वजों के ज्ञान द्वारा ही विनिर्मित हैं।

जीवन में किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले उस क्षेत्र में होने वाले कार्यों का गहन सर्वेक्षण करना आवश्यक होता है। बिना पूर्ववर्ती सर्वेक्षण के श्रम और श्रोतों का अपव्यय होता है और पुष्टपोषण होने की संभावना रहती है। मानव मस्तिष्क के ज्ञान की सीमाओं का रेचन और शोधन पूर्व ज्ञान के आधार पर किया जा सकता है।

**अध्ययन का औचित्य**

अर्थपूर्ण समस्या का अर्थ है ऐसी शोध, समस्या जो व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी हो और शोधकर्ता जिस पर अध्ययन कर सकता हो। इसके साथ ही साथ उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से ऐसी विश्लेषणीय परिकल्पनाओं का जन्म होता है जो शोध परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायता करती है। शोध परिकल्पनायें किसी भी शोध के लिए दिशा निर्देशक तंत्र होती हैं।

शोध समस्या का परिभाषीकरण एक महत्वपूर्ण शोध आयाम है। परिभाषीकरण का तात्पर्य उन चरों की परिभाषाओं से है, जो शोध में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सम्बन्धित साहित्य के पुरावलोकन से समस्या के विभिन्न चरों की परिभाषायें प्रसूत होती हैं और इसके साथ ही साथ इससे अध्ययन की प्रविधि का चुनाव तथा प्राप्त समकां के प्रक्रियाकरण में भी सहायता प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि शोध में रचनात्मकता, मौलिकता और चिंतन के विकास के लिए विस्तृत और गंभीर अध्ययन की आवश्यकता है। यहां अध्ययन का सम्बन्ध उस शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन से है। इस प्रकार शोध प्रक्रिया में सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

**उपसंहार**

केरल में उच्च माध्यमिक स्कूलों में छात्रों की पठन आदतों पर सामाजार्थिक कारकों और इलैक्ट्रोनिक मीडिया का प्रभाव एक प्रयोगिक अध्ययन, केरल विश्वविद्यालय तिरूवनन्तपुरम को प्रस्तुत शोध कार्य में उन्होंने परिवार को एक सामाजिक कारक मानते हुए उसके प्रभाव का भी विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। इसके निष्कर्ष में उन्होंने बताया कि परिवार छात्रों की पठन–आदतों को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित करता है, जो कि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है।

प्रस्तुत शोध भी विद्यार्थियों को पारिवारिक वातावरण का उनके आत्मविश्वास, राजनैतिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करता है। इस प्रकार डॉ0 देवराजन के इन शोध निष्कर्षों से शोधकर्ता को जहां एक ओर नवीन और सुस्पष्ट परिकल्पनोओं का निर्माण करने में सहायता मिली है, वहीं दूसरी ओर इन निष्कर्षों को पुर्नपरिक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

यद्यपि यह शोध दक्षिण भारत के केरल जैसे सर्वाधिक शिक्षित राज्य से सम्पन्न हुआ है, जहां अधिकांश अभिभावक शिक्षित और जागरूक हैं। जबकि आगरा के पारिवारिक परिवेश, सामाजिक परिवेश तथा सांस्कृतिक परिवेशों की तुलना में केरल जैसे राज्यों का परिवेश भिन्नता रखता है फिर भी डॉ0 देवराजन के इस शोध की प्रस्तुति प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के संदर्भ में महती भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता है।

**ग्रन्थ सूची**


| | | |
|---|---|---|
| बेस्ट जॉन डब्ल्यू | – | शिक्षा में अनुसंधान, भारतीय प्रेन्टिस हाल प्राइवेट लिमिटेड, 1991। |
| गुप्ता, एस0पी0 | – | उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पब्लिकेशन, हलाहाबाद, 2002। |
| भटनागर | – | शिक्षा मनोविज्ञान |
| आचार्य कृपलानी | – | जीवन और शिक्षा |
| अल्तेकर | – | प्राचीन भारत में शिक्षा |
| बेस्ट, जे0एन0 | – | रिसर्च, इन एजूकेशन, भारतीय प्रिन्टिस हाल नई दिल्ली, 1963। |
| बुच, एम0बी0 | – | ''रिलेशनशिप बिटवीन टीचिंग इफेक्टिवनेस टीचिंग एप्टीट्यूड एण्ड पर्सनॉल्टी ट्रेड्स'' 5 सर्वे ऑफ एजूकेशन (एम0बी0बुच) इण्डियन जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वाल्यूम – 1, (1988–22)। |

राय, पी0एन0 – अनुसंधान परिचय।

ब्राउन सी0डब्ल्यू0 एण्ड घिसेली ई0ई0 – साइंटिफिक मैथड इन साइक्लॉजी न्यूयार्क : मक्ग्राहिल 1955।

कोचरन, डब्ल्यू0जी0 – सैम्पलिंग टैक्निक, मुम्बई : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1964।

फोक्स, डेविड जे0 – दी रिसर्च प्रोसेस इन एजूकेशन, हॉल्ट, रिनचार्ट एण्ड विल्सन इन्क0 न्यूयार्क, 1969।

स्मिथ, एच0एल0 – एजूकेशनल रिसर्च, ब्लूमिंगटन : एजूकेशन पब्लिकेशन्स, 1944।

सुखिया, एस0पी0 – एलीमेन्टस ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, कोलकाता, एलाइड पब्लिकेशन 1966।

वान डेलिन डी0वी0 – अन्डरटेन्डिंग एजूकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क : मैक्ग्राहिल, 1962।

वर्मा, एम0 – इन्ट्रोडैक्शन टू एजूकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्च, मुम्बई : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1965।

अन्डर बुड, बी0जे0 – साइक्लोजिकल रिसर्च, न्यूयार्क : एप्लेटॉन सेन्चुअरी क्राफ्टस, 1957।

मौली, जी0जे0 – साइंस ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, नई दिल्ली, यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, प्राइवेट लिमिटेड, 1964।

रमल, ले0एफ0 – एन इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोसीजर इन एजूकेशन न्यूयार्क : एप्लेटोन सेन्चुअरी क्राफ्ट इन्क0, 1954।

एकॉफ, आर0एल0 – दी डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च चिकागो : दी यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस, 1963।

लुन्डवर्ग, जी0ए0 – सोशल रिसर्च, न्यूयार्क : लोन्गमेन्स, 1942।

लेहमेन, इरविन जे0 – एजूकेशनल रिसर्च (रीडिंगस इन फोकस) हॉल्ट, रिनेहर्ट एण्ड बिल्सन, इन्क0 न्यूयार्क, 1971।

कर्लिन्गर एफ0एन0 – फाउन्डेशन्स ऑफ बी हैबियरल रिसर्च, न्यूयार्क : हॉल्ट, रिनेहर्ट एण्ड विल्सन इन्क0, 1969।